PC-110/A

J-3/2041

हिन्दी नाटक और निबन्ध

Paper–III

Time : Three Hours] [Max. Marks : 100

नोट : यह प्रश्न-पत्र तीन भागों में विभाजित है। निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।

भाग-एक

I. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

(क) जीवन के आदि और उत्कर्ष के बीच एक और सीढ़ी है - जीवन का पुरुषार्थ। अपराध क्षमा हो आचार्य, आपकी कला उस पुरुषार्थ को भूल गयी है। जब मैं इन मूर्तियों में बँधे रसिक जोड़ों को देखता हूँ तो मुझे याद आती है पसीने में नहाते हुए किसान की, कोसों तक धारा के विरुद्ध नौका को खेने वाले मल्लाह की, दिन-दिन भर कुल्हाड़ी लेकर खटने वाले लकड़हारे की। .... इनके बिना जीवन अधूरा है, आचार्य!

अथवा

जैसे मरुस्थल में कहीं निर्झरिणी सहसा गायब हो जाने पर भी अन्यत्र बह निकलती है, वैसे ही मेरी भटकी हुई प्रतिभा तुम्हारे मन में विकस उठी।

(ख) कमाया है तो फायदा। न तीरथ, न जप-तप, न बर्त। कभी हरिद्वार भी न गए। मैं तो तुम्हारा पैसा जानती ही नहीं? चार कोठियाँ हैं और हम इसी गली में पड़े सड़ रहे हैं। आज तीन-चार लाख रुपये के मालिक हो। एक पैसा भी कभी दान नहीं दिया। ऐसा रुपया किस काम का?

अथवा

इसलिए कि हमारे समाज में यह ब्याह-शादी मनुष्य से, मनुष्य के रिश्ते से नहीं होती, हमारे यहाँ शादियाँ होती हैं नौकरी के रिश्ते से, पद और भौतिक ख्यालों से। ब्याह हमारे यहाँ महज एक कर्मकाण्ड है-एक परम्परा का पालन। यह जीवन-अनुभूति, जीवन-संगीत नहीं है।

(ग) कहते हैं दुनिया बड़ी भुलक्कड़ है। केवल उतना ही याद रखती है, जितने से उसका स्वार्थ सधता है। बाकी को फेंककर आगे बढ़ जाती है। शायद अशोक से उसका स्वार्थ नहीं सधा। क्यों उसे वह याद रखती? सारा संसार स्वार्थ का अखाड़ा ही तो है।

अथवा

जो सिद्ध कवि हैं वे चाहे जिस छन्द का प्रयोग करें, उनका पद्य अच्छा ही होता है, परन्तु सामान्य कवियों के विषय के अनुकूल छन्द योजना करनी चाहिए। जैसे समयविशेष में रागविशेष के गाये जाने से चित्त अधिक चमत्कृत होता है, वैसे ही वर्णन के अनुकूल वृत्त-प्रयोग करने से कविता का आस्वादन करने वालों को अधिक आनन्द मिलता है। (3×10=30)

भाग-दो

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(क) रंगमंचीयता की दृष्टि से 'कोणार्क' नाटक की समीक्षा करें।

अथवा

'कोणार्क' नाटक का उद्देश्य स्पष्ट करें।

(ख) एकांकी के तत्त्वों के आधार पर 'बसंत ऋतु का नाटक' एकांकी की समीक्षा करें।

अथवा

'मैं भी मानव हूँ' एकांकी का मूल भाव स्पष्ट करें।

(ग) 'अशोक के फूल' निबंध का सार लिखें।

अथवा

'होली' निबंध की समीक्षा करें। (3×10=30)

भाग-तीन

III. निम्नलिखित सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'कोणार्क' नाटक का मूल भाव स्पष्ट करें।
2. 'कोणार्क' नाटक की संवाद-योजना पर नोट लिखें।
3. 'कोणार्क' नाटक की विषय-वस्तु पर चर्चा करें।
4. रामकुमार वर्मा का जीवन परिचय दीजिए।

5. 'दस हजार' एकांकी का संक्षिप्त सार लिखें।

6. लक्ष्मीनारायण लाल के व्यक्तित्व पर चर्चा करें।

7. 'चेतना का संस्कार' निबंध पर संक्षिप्त नोट लिखें।

8. रामचन्द्र शुक्ल का जीवन परिचय दीजिए।

9. 'कवि-कर्तव्य' निबन्ध पर संक्षिप्त नोट लिखें।

10. हजारीप्रसाद द्विवेदी के व्यक्तित्व पर चर्चा करें। (4×10=40)

———————————